© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

गोविन्द मिश्र के कथा साहित्य में सांस्कृतिक चेतना: एक विवेचना

सुरेश कुमारी, शोध छात्रा
हिन्दी विभाग जम्मू विश्वविद्यालय

सार:

किसी देश, समाज या समुदाय के जनजीवन में व्याप्त गुणों एवं विशिष्टताओं के समग्र रूप का नाम ही संस्कृति है जो उनके व्यवहार, रहन-सहन, नृत्य, गायन, साहित्य एवं कला आदि में स्पष्टतः परिलक्षित होती है। संस्कृति जीवन की नियामक शक्ति है। वह जीवन की पवित्र आत्मा है, जिसका सजृन देश-काल और परिस्थिति के अनुसार समाज के क्रिया-व्यापार से ही सम्भव है। जीवन को संस्कारित करना इसका स्वभाव है। मूल्य रचना का सम्बन्ध भी इसी संस्कृति से है। संस्कृति के निर्माण में लोक की भूमिका, उसका श्रम, उसका जीवन केन्द्र होता है, व्यक्ति संस्कृति की धारा में शामिल होकर सुसंस्कृत हो जाता है और उस संस्कृति के निर्माण में अपना भी योगदान दे सकता है। संस्कृति का एक वर्गीय स्वरूप भी होता है, लेकिन तब हम विभिन्न संस्कृतियों के अन्तस्सम्बन्धों को स्वीकार नहीं कर पायेंगे, इसलिए कि आर्थिक सम्बन्धों की प्रक्रिया तो तेज होती है, लेकिन संस्कृति का निर्माण और संस्कृति का विनाश इतनी शीघ्रता से नहीं होता, इस अन्तराल में अन्य सांस्कृतिक परम्पराएँ भी उसमें जुड़ जाती हैं।

मुख्य शब्द: संस्कृति, देश-काल, परम्पराएँ, समुदाय आदि।

प्रस्तावना:

1965 से लगातार और उत्तरोत्तर स्तरीय लेखन के लिए प्रसिद्ध गोविन्द मिश्र जिनकी समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में अपनी अलग पहचान है - एक ऐसी उपस्थिति जो एक सुविख्यात साहित्यकार का बोध कराती है, जिसकी वरीयताओं में लेखन ही सर्वोपरि हैं, जिसकी चिन्ताएं समकालीन समाज से उठकर 'पृथ्वी पर मनुष्य' के रहने के सन्दर्भ तक जाती हैं और जिसका लेखन फलक 'लाल पीली ज़मीन' के यथार्थ, 'तुम्हारी रोशनी में' की कोमलता और काव्यात्मकता, 'धीर समीरे' की भारतीय परम्परा की खोज, 'पाँच आँगनों वाला घर' के इतिहास और अतीत के सन्दर्भ में आज के प्रश्नों की पड़ताल, 'धूल पौधों पर' में मध्यमवर्गीय नारी का आत्मसंघर्ष इन्हें एक साथ समेटे हुए है।